मध्वाचार्य के दर्शन में मानव नियति की अवधारणा

नन्दिता सिंह

शंकर के अद्वैतवाद के विरोध में एक प्रमुख प्रतिक्रिया स्वरूप द्वैतदर्शन है जिसका सम्बन्ध मध्वाचार्य के नाम से है और यह अनेक विषयों में रामानुज के यथार्थ सत्ता सम्बन्धी विचार के समान हैं। मध्वाचार्य अद्वैत वेदान्त के निर्विशेष ज्ञान की अवधारणा को अस्वीकार किया है, क्योंकि यह सामान्य अनुभव एवं तर्क के विपरीत है। उनकी दृष्टि में ज्ञान सदैव सविशेष एवं सविषय होता है। मध्वाचार्य उग्र द्वैतवादी है तथा अभिश्रित द्वैत के पोषक या मायावाद को वे बौद्ध शून्यवाद का विकृत औपनिषद संस्करण ही है।[1] अद्वैत वेदान्तियों को वे 'मायि–दानव' (मायावाले दैत्य) कहते हैं जो अज्ञान एवं अन्धकार के कारण उछल कूद मचाते हैं। पुनः तार्किक आधार से युक्त द्वैतरूपी सूर्य के उदय होने के पश्चात भाग जाते हैं। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार शंख–चक्रयुक्त हरि के आने पर दानव भाग जाते हैं।